सम्पादक के नाम

अर्थव्यवस्था बहुत बुरी स्थिति में पुहंच गयी है

खबर आयी है कि विदेशी निवेशक बाजार में बहुत तेजी से अपना पैसा निकाल रहे हैं। उन्होंने अप्रैल महीने में भारतीय कैपिटल मार्केट से 15,500 करोड़ रुपए से ज्यादा की निकासी की है, इतनी रकम पिछले सोलह महीनो में किसी एक महीने में नही निकाली गयीं है। वैसे एफपीआई ने फरवरी में भी पूंजी बाजार से 11,674 करोड़ रुपए निकाले थे लेकिन इस बार तो यह रिकॉर्ड भी टूट गया इसे पिछले 165 महीनों की सर्वाधिक निकासी बताया जा रहा है।

बैंकिंग की भी हालत बहुत खराब है 55 सालो के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है कि भारतीय बैंकों के राजस्व में इस कदर गिरावट दर्ज की गई हैं बैंक डिपोजिट ग्रोथ रेट पिछले 55 सालों में सबसे कम हो गया है। मार्च 2018 को खत्म हुए वित्त वर्ष में बैंक में लोगों ने 6.7 फीसदी की दर से पैसे जमा किए। यह 1963 के बाद सबसे कम है। यह कोई फेक जानकारी नही है यह भारतीय रिजर्व बैंक की वेबसाइट से मिली ऑफिशियल जानकारी है।

सबसे बड़ी बात तो यह है कि नवंबर 2016 में नोटबंदी किए जाने के बाद तकरीबन 86 फीसदी डिपोजिट बैंकों में पहुंच गयी थी नोटबंदी के बाद नवंबर-दिसंबर 2016 में बैंकों के पास 15.28 लाख करोड़ रुपये आए थे।

इससे वित्त वर्ष 2017 में बैंकों का डिपॉजिट 15.8 पर्सेंट बढ़कर 108 लाख करोड़ रुपये हो गया था लेकिन अब इसकी ग्रोथ 6.7 पर्सेंट रह गई है। लोग बैंकों से रकम निकालते जा रहे हैं और जमा कराने में कंजूसी कर रहे हैं, किसी का मूड नही है कि रकम वापस बैंक में रखी जाए।

राजनीतिक दृष्टि से आप मोदी सरकार को कितना भी सफल बता दे लेकिन सच्चाई यह है आर्थिकी के स्तर इस सरकार के प्रति लोगो मे भयंकर अविश्वास पनप गया। इसकी गवाही आंकड़े दे रहे।

गिरीश मालवीय

कश्मीर शायद अब सबके हाथ से निकल गया है

नेतृत्व तो कोई है ही नहीं। जो जे आर एल बनाया है हुर्रियत (गीलानी), हुर्रियत (मीरवाइज़) और जे के एल एफ (यासीन मलिक) ने मिलकर, उसकी कोई नहीं सुनता। भीड़ उसके पीछे नहीं बल्कि वह भीड़ के पीछे है। डाउनटाउन में एंटी हुर्रियत वालराइटिंग्स कोई भी देख सकता है। हालात ऐसे कि मीरवाइज़ कैम्प के फ़ज़ल उल हक़ की सिक्योरिटी पर दिन दहाड़े हमला करके गन छीन ली गई महीना भर पहले।

महबूबा मुफ्ती आम कश्मीरी के लिए एक विलेन हैं। जो इकलौती परिपक्व आवाज़ सुनाई देती है वहाँ इन दिनों वह उमर अब्दुल्ला की है, लेकिन उसे सुनने वाले भी नहीं। एक भयावह अराजकता का माहौल है।

परिणाम ख़तरनाक होने ही हैं। पत्थरबाज़ी अब पागलपन में बदल गई है तो स्कूल बस के बाद अब टूरिस्ट्स की गाड़ी पर। वर्षों से अलिखित रूल रहा है कि टूरिस्ट पर हमले नहीं होते। सच कहें तो इसका कारण आर्थिक अधिक है नैतिक कम। पूरे कश्मीर की अर्थव्यवस्था टूरिज़्म पर निर्भर है। इस साल यह नियम टूटा है। दो ऐसी घटनाएँ सामने आई हैं, परिणाम होगा टूरिस्ट्स की आमद में भारी कमी। नतीजा और अराजकता...

न कहीं अंत नज़र आता है इसका न ही इसे सुलझाने के लिए कोई इच्छा शक्ति कहीं।

अशोक कुमार पांडे

पूरी रामायण और महाभारत 3-3 बार पढ़ी

1-जिस देश के महापुरुष ने छोटी सी बात पर स्त्री के नाक काट दिए थे वहां के समाज में स्त्री पर तेज़ाब फेकना कौन सी बड़ी बात है।

2-जिस देश के महापुरुष ने केवल इस बात पे एक शुद्र की हत्या कर दी थी की उसने यज्ञ किया था वहाँ शूद्रों को मन्दिर में जाने से रोकना कौन सी बड़ी बात है।

3-पाँच पाँच पतियों के होते हुए अगर स्त्री का चीरहरण सभा के बीच में हो सकता है वहाँ के समाज में बलात्कार और छेड़छाड़ तो मामूली बात होगी।

4-जहाँ स्त्री को ही हर बार अग्निपरीक्षा देनी पड़ी हो वहां के समाज में पुरुष के सामने स्त्री की कोई औकात नही ये कौन सी बड़ी बात है।

5-जहां देवता ही बलात्कार करता हो और दंड भुगतना पड़ता हो स्त्री को, उस समाज में स्त्री हमेशा प्रताड़ित हो कौन सी बड़ी बात है (अहिल्या व गौतम)

6-जहाँ गुरु ने सिर्फ इस बात पे शिष्य का अंगूठा काट लिया हो कि वह शुद्र है वहाँ इनके पढने से रोका जाये कौन बड़ी बात है।

एक और बड़ी बात-

दोनों ग्रन्थों में कोई भी सामान्य तरीके से नही पैदा हुआ है। कोई आम से तो कोई सूर्य से तो कोई मछली से, पता नही कहाँ कहाँ से.....और हम विश्वास करते हैं ।

हमें पागल समझ रखा है क्या। देश को आगे बढाना है तो कचरे को छोड़कर संविधान पढो। सारी समस्या का एक समाधान संविधान का सच्चा ज्ञान।

सुमेधा

संजरपुर के आफताब और मोनू के एसओजी द्वारा उठाये जाने के बाद फर्जी मुठभेड़ में मारे जाने की आशंका...

प्रति,

पुलिस महानिदेशक

उत्तर प्रदेश।

विषय- आजमगढ़ के संजरपुए गांव के आफताब के एसओजी द्वारा उठाने की आशंका से भयभीत उनके भाई नजरे आलम के हवाले से। आफताब को डेढ़ साल पहले भी पुलिस ने उठाकर पैर में गोली मारकर फर्जी मुठभेड़ में गिरफ्तारी का दावा किया था।

महोदय,

नजरे आलम ने 98 89 119008 से बताया कि उसका भाई आफताब पुत्र शमशुद्दीन आज सुबह कचहरी के लिए तारीख पर गया था। उसके साथ मोनू भी गया था। उसका मोबाइल बंद जा रहा था तो वकील साहब ने बताया कि दस्तखत कर वे 12-1 के करीब वे वहां से निकले थे। उसके बाद उसका पता नहीं चल रहा है।

उन्हें इस बात का डर है कि कहीं उनके भाई को फर्जी मुठभेड़ में न मार दिया जाय। इसके पहले डेढ़ साल पहले उनके भाई के पैर में गोली मारकर फर्जी मुठभेड़ में गिरफ्तारी का दावा किया गया था। उन्हें डर है कि एसओजी उसे उठाकर कहीं किसी फर्जी मुठभेड़ में मार न दे। उन्होंने डीआईजी, एसपी व अन्य को फ़ैक्स कर दिया है।

इसके पहले भी आजमगढ़ में फर्जी एनकाउंटर के मामले संज्ञान में आए हैं और मनवाधिकार आयोग जांच कर रहा है। यह मामला विधि व्यवस्था और लोकनीति का है आप से अनुरोध है कि आजमगढ़ के आफताब और मोनू के मामले को संज्ञान में लिया जाए।

आफताब जिसके बारे में उनके भाई को डर है कि उसे फर्जी मुठभेड़ में पुलिस मार सकती है के बारे में यथाशीघ्र सूचना सार्वजनिक की जाय।

राजीव यादव, रिहाई मंच

संघ की अपराध कहानी एक पूर्व संघी की जुबानी

डा. बी.एन. सिंह

मै 38 साल संघ में रहा हूँ और ओ टी सी भी किया हूँ । मै कक्षा 4 से ही संघ मे गिरफ्तार हो गया और अटल जी तक रहा। वैसे 1988 से ही मोह भंग हो गया था लेकिन कुछ व्यक्तिगत संबंधों के कारण लोगों जैसे गोविंद जी. विनय कटियार और बाल जी जैसे लोगों के कारण जुड़ा रहा । लेकिन जैसे जैसे गांधी नेहरु, मार्क्स, लेनिन और चेगुवारा जैसे लोंगो को पढ़ता गया और संघ के अंदरूनी लोंगो को समझता गया तो दूरी बनती गयी। आज यूपी के जितने मंत्री है सरकार में सब हमे अच्छी तरह जानते है।

खैर संघ है क्या और इसकी बिचारधारा क्या है ? इसका लक्ष्य क्या है ? 80 प्रतिशत संघी नही जानते है। वैसे कोई भी संघ का स्वयंसेवक कभी भी गाली-गलौच नही करता। ये उसकी सबसे बड़ी अच्छी मेरिट है और हाँ वह तर्क भी नही करता। संघ के खिलाफ सुनता नही और जहाँ संघ के खिलाफत की जगह हो वह वहाँ नही रुकता। अत: 100 प्रतिशत गारंटी है कि फेसबुक पर जितने भक्त हैं वे मोदी भक्त हैं निहायत बदतमीज मोदी की तरह और वे विना किसी आधार या तर्क के पं नेहरू और मुसलमानों का बिरोध करते है: जब आप तर्क करेंगे तो वे वहाँ से हट जायेंगे।

बाबरी मस्जिद विध्वंस में शामिल था डालमिया

मोदी के डालमिया ने लाल किला की टिकट 10 से सीधा 75 रुपये कर दी है..!!

वहाँ किसी प्रतिभावान को आगे नहीं रखा जाता। जनसंघ से लेकर बीजेपी मे आज तक कोई प्रतिभावान व्यक्ति आगे नहीं जाता, जो थोड़ा भी प्रतिभावान होता है उसका हश्र बलराज मधोक, दीनदयाल और अडवानी का होता है। हिन्दुत्व की खोज तो सावरकर की है लेकिन उसके असली आइडियोलाग गोलवलकर थे। संघ पहले महाराष्ट्र के चितपावन ब्राह्मणों का एक गिरोह था । पहले इसका नाम अंग्रेजों के जमाने मे रायल सीक्रेट सर्विस था और अंग्रेजो के दलाली के लिये ही यह बना था। आजादी की लड़ाई मे एक तरफ अंग्रेजों की दलाली भी करते थे और दूसरी तरफ मुसोलिनी और हिटलर से भी संबंध रखते थे। इनके बिचार मुसोलिनी और हिटलर के हैं। इनका आकलन था कि दूसरे विश्व युद्ध मे हिटलर जीत जायेगा। और.उसके समर्थन से भारत पर कब्जा कर लेंगे। लेकिन हुआ उल्टा। इनका लक्ष्य तथाकथित हिंदू राज्य है जहाँ जर्मन रेस के हिटलर की तरह चितपावन रेस के ब्राह्मणों का इस देश पर राज हो और मनुवाद संविधान जिसमे ब्राह्मण सुप्रीम और सब उनके अंडर रहें। दलित और औरतें खासकर गुलाम हों । दलित सबकी सेवा करे और औरते सिर्फ बच्चा पैदा करें।

खैर गांधी नेहरू ने इनके सपने को चूर-चूर कर दिया। लेकिन सदियों से चली आ रही शोषणकारी ब्यवस्था जो असमानता के उपर बनी है इनके लिये खाद पानी का काम कर रही है। ये किसी को समर्थन दे सकते हैं और ले सकते हैं बशर्ते वह इनके हिन्दू राज मे बाधा न हो। इन्होंने माफी मांगकर पटेल को समर्थन दिया, आपातकाल मे इंदिरा गांधी का समर्थन किया। 1980 मे अटल के गांधीवाद समाजवाद के खिलाफ इंदिरा जी का समर्थन किया और 1984 में इंदिराजी के बाद राजीव का भी समर्थन किया।

1975 से तो मै साथ ही हूँ। बनारस मे राजनरायण को हराने के लिये, कमलापति त्रिपाठी को जिताने के लिये प्रत्याशी भरत सिंह राजपूत को बदलकर ओम प्रकाश सिंह कुर्मी को लाये। जिससे कुर्मी वोट राजनरायण को न मिले। और 20000 वोट से राजनरायन हरा दिये गये। मेरा मतलब है कि ये दिल्ली मे उसी को मदद करते है जो इनके एजेंडे मे बाधा नही होता। राजीव ने अयोध्या मे ताला खोला। पटेल के जमाने मे पंत ने अयोध्या मे 22 दिसंबर 1949 के रात को बाबरी मस्जिद मे रामलला की मूर्ति रखवायी। नेहरू को अंधेरे मे रखकर, नेहरू ने यहाँ तक कहा कि जिस यूपी कांग्रेस मे मै 35 साल इन लोगों के साथ काम किया आज वो मेरे लिये फारेन लैंड हो गयी है। पंत ने दिग्विजय नाथ से मिलकर आचार्य नरेंद्र देव को हराया। मतलब संघ का रिश्ता नेहरू को छोड़ कांग्रेस से सदैव रहा। नेहरू इनको जानते थे और औकात मे रखते थे।

इनको क्या चाहिये ? विकास इनका एजेंडा कभी नही था और न है। मंदिर 370 और कामन सिविल कोड। इन तीनों का मोदी ने कभी नाम नही लिया। अयोध्या जाना तो दूर उसकी चर्चा भी नही की। 370 के समर्थन से कश्मीर मे सरकार बना ली,भागवत की छाती पर मूंग दलकर। कामन सिविल कोर्ट की जगह मुस्लिम महिलाओं के लिये तीन तलाक का खेल खेलने लगे। मोदी चिल्लाकर बोलता है कि अंबेडकर नही होते तो मै पीएम नही बनता । कभी कहा कि सावरकर , गोलवलकर ,भागवत ने हमे पी एम बनाया।

अटल से ज्यादा मोदी और शाह संघ के लिये खतरनाक हैं। मोदी की काट के लिये दिग्विजय के उत्तराधिकारी को लाया गया । मोदी के प्रत्याशी को गोरखपुर मे जानकर हराया गया। कोल्डवार जारी है। मोदी और शाह का खेल बहुत लंबा नही चलेगा। बीजेपी चुनाव मे खुद संघ के द्वारा हरा दी जायेगी अगर मोदी पीएम के प्रत्याशी रहे तो। नही तो 2019 मे वे हटा दिये जायेंगे। अब तो राहुल भी इंडियन नेशलिस्ट की जगह हिंदू नेशनलिस्ट की सर्टिफिकेट बटोर ही रहे है। कभी आपने संघ द्वारा सोनिया या उनके परिवार के खिलाफ कोई बात सुनी है । मोदी की इच्छा के खिलाफ खट्टर ने जब बाड्रा का केस खत्म कर दिया। कल जो अडवाणी थे आज मोदी को बनाया गया और आज जो अडवाणी है कल बहुत ही जल्दी मोदी होने वाले हैं। संघी सत्ता से टकराव नही लेते और समय आने पर सत्ता की औकात भी बताते हैं। संघ मे प्रतिभाहीन, सरस्वती विहीन, लगनशील लोग ही आगे बढ़ते हैं मोदी ने संघ को दरकिनार किया है, लेकिन बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी।